International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-04-2020; Accepted: 24-04-2020; Published: 06-05-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 09-11

लुधियाना मिशन प्रेसः उत्तर भारत की पहली प्रैस 1836.1900

नितिश सचदेवा
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, गवर्नमेंट कॉलेज पूर्वी, लुधियाना, पंजाब, भारत

सारांश
लुधियाना मिशन प्रेस की स्थापना अमेरिका की प्रेस्बिटेरीयन ईसाई मिशन द्धारा की गई थी। ये प्रेस्बिटेरीयन मिशन पंजाब में ईसाई धर्म का प्रचार करने वाला पहला मिशन था। इस मिशन ने लुधियाना में अपना कार्य 1834 ई. मे शरु किया। और 1836 ई. में इस मिशन ने लुधियाना मे प्रेस की स्थापना की। भारत में प्रेस इन मिशनरीयों के लिए धर्म प्रचार का मुख्य साधन थी। प्रेस्बिटेरीयन मिशन ने इस प्रेस द्धारा बहुत सारा धार्मीक साहित्य प्रकाशित किया इसके अलावा पंजाबी साहित्य का बहुत सा कार्य इस मिशन प्रेस द्धारा प्रकाशित किया गया जैसे पंजाबी भाषा का पहला शब्दकोश, और व्याकरण भी इस प्रेस द्धारा प्रकाशित किया गया। इसके अलावा पंजाब का पहला समाचार पत्र भी इस प्रेस से निकाला गया। ये प्रेस लुधियाना के नही पंजाब के इतिहास में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

मूल शब्दः प्रेस, मिशन, साहित्य, लुधियाना

प्रस्तावना
1813 के चार्टर एक्ट में ईसाई मिशनरीयों को भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करने की अनुमति प्रदान की गई। जिसके परिणाम में भारत में बहुत से ईसाई मिशन भारत में धर्म प्रचार करने के लिए आए। धर्म प्रचार करने के लिए इन मिशनरीयों ने शिक्षा को मुख्य साधन बनाया, और बहुत सारा ईसाई धार्मीक साहित्य यहां प्रकाशित करके यहां के लोगों में वितरित किया। जिसके लिए उन्होने भारत मे कई क्षेत्रों मे प्रेस की शुरुआत की। भारत में पहली प्रिंटिंग प्रेस 1556 ई. मे गोवा में पुर्तगाली ईसाई मिशनरीयों द्धारा स्थापित की गई। अब हम बात करते हें लुधियाना मिशन प्रेस की जिसकी स्थापना 1836 ई. में की गई थी। इसके कार्य जानने से पहले इसकी स्थापना की पृष्ठभूमि जानना भी बहुत जरुरी है। अमेरिका के प्रेस्बिटेरीयन चर्च ने 1830 के दशक मे अपने बहुत से ईसाई मिशनरीयों को धर्म प्रचार करने के लिए अलग–अलग देशों मे भेजा। इनमे से एक मिशन भारत मे धर्म प्रचार के लिए भेजा गया जिसका नेतृत्व जॉन. सी. लोरी ने किया उनके साथ विलियम रीड़ भी उनकी सहायता के लिए साथ आए। इन मिशनरीयों को भारत मे कहीं भी धर्म प्रचार करने के लिए इनकी इच्छा पर छोड़ दिया गया। काफी सोच विचार कर इन्होने पंजाब के लुधियाना में अपनी गतिविधियां आरम्भ करने का निर्णय किया। इसके अलावा चार्ल्स ट्रेवेलियन जो उस समय गर्वनर जनरल के निजी सचिव थे उन्होने भी इन मिशनरीयों को पंजाब मे अपना कार्य करने की सलाह दी। इसके परिणामस्वरुप यह मिशन कलकत्ता से नवंबर 1834 मे लुधियाना आया।

मिशन प्रेस की स्थापना और कार्य
1835 मे प्रेस्बिटेरीयन मिशन के अन्य मिशनरी जिनमे हेनरी विल्सन, जॉन न्यूटन मुख्य थे भारत आए। इन मिशनरीयों को अपने साथ एक प्रिंटिग प्रेस साथ ले जाने की सलाह दी गई थी। तो ये मिशनरी सबसे पहले कलकत्ता आए और इन्होने कलकत्ता की *'बैप्टिस्ट मिशन प्रेस'* से एक प्रिंटिग प्रेस साथ मे पेपर और प्रिंटिग के लिए स्याही प्रापत की ये प्रेस पुराने चलन की और इसका अधीकतर ढांचा लकडी का बना था। इन मिशनरीयों ने प्रेस तो प्रापत कर ली मगर उन्हे एक समस्या थी की इस प्रेस को चलाएगा कोन क्योंकी इन मिशनरीयों मे से किसी को भी इसे चलाने की जानकारी नही थी। तो इस समस्या का समाधान *'बैप्टिसट मिशन प्रेस'* के अधीक्षक विलियम पियर्स ने किया उन्होने अपने यहां के अपने स्थानीय कर्मचारी जो प्रेस को चलाना जानता हो इस कार्य को अंजाम देने मे मिशनरीयों की सहायता के लिए साथ भेजा ये मिशनरी अगले वर्ष 1836 को प्रेस के साथ लुधियाना पहुंच गए। इसी वर्ष इन्होने यहां ये प्रेस चालू की इसके लिए उन्होंने यहां एक छोटी सी जगह जिसमे तीन कमरे थे तैयार की जिसमे एक मे उन्होंने प्रेस दूसरे मे छापाई की सामग्री और पेपर और तीसरे को जिल्द (bindery) बनाने के लिए उपयोग किया गया। जॉन. सी लोरी के बीमार होने की वजह से उन्हें वापिस अमेरिका जाना पडा और प्रेस की जिम्मेदारी जॉन न्यूटन ने संभाल ली। कलकत्ता से प्रेस को चलाने के लिए आए कर्मचारी ने जॉन न्यूटन को प्रेस चलाना सिखाया और बाद मे ये दोनो यहां के स्थानीय कर्मचारीयों को इसे चलाना सिखाते।

प्रेस की स्थापना के बाद इसने अपना प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया। इस प्रेस द्धारा प्रकाशित पहली रचना *'A Sermon For The Whole World'* ये फारसी भाषा का ट्रैक्ट था इसके पश्चात इस प्रेस द्धारा पंजाब का पहला समाचार पत्र *'लोदीयाना अखबार'* प्रकाशित किया गया। ये समाचार पत्र फारसी भाषा में छपता था इस समाचार पत्र को प्रकाशित करने मे लुधियाना मे ईस्ट इंडिया कंपनी के राजनीतिक एजेंट कैप्टन वैड ने काफी सहयोग दिया। ये पत्र मूल रुप से हस्तलिखित तैयार करके एसे ही छापा जाता था इसे टाइप नही किया जाता था। ये चार पन्नों के अखबार की 30 प्रतियां ही निकाली जाती थी। इसमे पत्र के लेख पडोसी राज्यों की राजनीति से संबंधित होते थे। समाचार लिखने का कार्य कंपनी की सरकार द्धारा नियुक्त कर्मचारी और राज्यों के प्रतिनिधि करते थे। ये मिशन प्रेस आरम्भ मे कइ बार दुर्धटनाओं का भी शिकार हुई 1845 मे जहां ये प्रेस चलाई जा रही थी वहां आग लगने की वजह से इसका बहुत सारा सामान और प्रकाशित सामग्री नष्ट हो गई। इसके बाद जब इसे दोबारा शुरु किया गया तो इसकी प्रकाशित सामग्री को सुरक्षित रखने के लिए अलग जगह का निमार्ण किया गया। इसके बाद 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय ये प्रेस विद्रोहीयों का शिकार बनी जिससे फिर एक बार इस प्रेस द्धारा प्रकाशित बहुत सा साहित्य

नष्ट हो गया। फिर भी ये मिशन प्रेस अपना कार्य करती रही। *'लोदीयाना अखबार'* के पश्चात इस प्रेस द्धारा एक साप्ताहिक समाचार पत्र 1872 मे निकाला गया जिसका नाम *'नूर अफशान'* था। इस पत्र को मिशनरी ई.एम वेरी द्धारा शुरु किया गया। ये पत्र अर्ध धार्मीक था जिसमे कुछ धार्मीक और राजनीतिक समाचार छपते थे। ये आरम्भ मे चार पन्नों मे छपता था जिसकी भाषा फारसी–उर्दू थी। और फिर बाद मे ये एंग्लो–वर्नाक्यूलर भाषा में छपने लगा फिर ये समाचार पत्र 8 फिर 24 पन्नों मे तबदील हो गया जिसमे 8 पन्ने अंग्रेजी भाषा मे छपते थे। इस समाचार पत्र को प्रिंटिंग करने के लिए जो पेपर इस्तेमाल होता था इसके लिए *'लंदन ट्रैक्ट सोसाइटी'* प्रेस्बिटेरीयन मिशन प्रेस को मुफ्त अनुदान प्रदान करती थी। जॉन. न्यूटन के अनुसार 1884 में इस समाचार पत्र की 600 से 700 प्रतियां निकाली जाती थी। बेशक ये वर्नाक्यूलर पत्र था मगर इसे पढने वाले ग्राहक देश भर मे थे क्वेटा, पेशावर, मद्रास, कलकत्ता, बॉम्बे और रंगून तक इस समाचार पत्र के ग्राहक थे। लुधियाना मिशन की 1886 की वार्षीक रिपोर्ट के अनुसार इस समाचार पत्र के लिए वार्षीक सदस्यता शुल्क 2 से 4 रुपए था। जिसमे एक पते पर तीन प्रतियां (copies) ड़ाक द्धारा भेजी जाती थी।

इन समाचार पत्रों के अलावा इस मिशन प्रेस द्धारा पंजाबी साहित्य के विकास मे काफी महत्वपूर्ण कार्य किए गए। हालांकि लुधियाना की प्रेस्बिटेरीयन मिशन प्रेस से पहले पंजाबी भाषा में थोडा सा कार्य देश के और मिशन प्रेस द्धारा किया गया। पंजाबी भाषा मे प्रकाशित होने वाली सबसे पहली रचना बाईबल थी। जिसे बंगाल की सीरमपुर मिशन प्रेस द्धारा 1811 मे प्रकाशित किया गया। इस कार्य को ब्रिटिश मिशनरी विलियम कैरे द्धारा किया गया उन्होने बाईबल को पंजाबी भाषा मे अनुवादित कर इसे प्रकाशित कराया ये पंजाबी भाषा में छापी गई पहली पुस्तक और बाईबल का पहला पंजाबी अनुवाद था। इसके पश्चात 1812 मे विलियम कैरे द्धारा तैयार पंजाबी भाषा की पहली व्याकरण ´/ Grammar Of The Punjabee Language´ प्रकाशित हुई ये भी सीरमपुर मिशन प्रेस द्धारा ही छापी गई। हांलाकि पंजाबी भाषा की पहली व्याकरण मुंशी कांशी राम खत्री द्धारा 1810 मे लिखी गई थी जिसका नाम 'कायदा–ए–जबान–ए–पंजाबी' था जिसे उर्दू भाषा मे लिखा गया था। मगर ये कभी प्रकाशित नही हुई। अब हम बात करते हें *'लुधियाना मिशन प्रेस'* की इस प्रेस ने पंजाबी भाषा के विकास मे अपना योगदान दिया जिसमे महत्वपूर्ण योगदान जॉन. न्यूटन का था। जिन्होने 1840 मे मेथ्यू के गॉस्पल को पंजाबी मे अनुवादित किया और मिशन प्रेस द्धारा प्रकाशित किया। 1868 मे जॉन. न्यूटन ने सम्पूर्ण *'न्यू टेस्टामेंट'* को पंजाबी मे प्रकाशित कराया (इससे पहले न्यू टेस्टामेंट पंजाबी भाषा मे 1815 मे बंगाल की सीरमपुप मिशन प्रेस द्धारा प्रकाशित किया जा चुका था। मगर ये व्यवहारिक रुप मे कम उपयोग होता था) जॉन न्यूटन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य पंजाबी भाषा की पहली व्यापक व्याकरण को तैयार करना था जो Á Grammar Of The Panjabi language^ के नाम से 1851 मे लुधियाना मिशन प्रेस द्धारा प्रकाशित हुई और 1854 मे न्यूटन ने लेवी जेनवीयर के सहयोग से पंजाबी भाषा का पहला शब्दकोश *Á Dictionary Of The Punjabi Language´* प्रकाशित किया ये शब्दकोश 438 पेज का जिसमे 25000 शब्द थे जिसमे से ज्यादातर शब्द वही थे जो लुधियाना और आस पास के क्षेत्रों मे बोले जाते थे। ये शब्दकोश गुरमुखी और रोमन लिपि मे था। इन कार्यों के कारण जॉन. न्यूटन को 'आधुनिक पंजाबी भाषा का पिता' भी कहा जाता है। इन मिशनरीयों द्धारा यहां की स्थानीय भाषा सीखना आवश्यक था। इन मिशनरीयों को आदेश दिए जाते थे की पंजाब मे अपना धर्म प्रचार करने से पहले यहां की भाषा सीखें पंजाब आने वाले मिशनरी सबसे पहले यहां हिन्दोस्तानी और पंजाबी सीखते थे। इन मिशनरीयों को पंजाब मे धर्म प्रचार करने के लिए इन भाषाओं को जानना आवश्यक था और यह अंग्रेजी सरकार की प्रशासनिक आवश्यकता भी थी। इस लिए इन मिशनरीयों ने पंजाबी भाषा मे अपना योगदान दिया। क्योंकी इन अनुवादित पुस्तकों को पंजाब आने वाले नए मिशनरी पढ कर पंजाबी भाषा सीखते थे। उनके लिए यह बहुत जरुरी था नए मिशनरीयों को एक स्थानीय भाषा की परीक्षा देना पडती थी जब तक वो इस परीक्षा मे पास नही होते थे तब तक उन्हें मिशन के महत्वपूर्ण निर्णयों मे अपना मत देने का अधीकार नही दिया जाता था। केवल पंजाबी भाषा मे ही नही इस मिशन प्रेस द्धारा उर्दू ,फारसी के लिए भी साराहनीय कार्य किया गया। 1865 मे उर्दू मे पूर्ण न्यू टेस्टामेंट और 1868 मे सम्पूर्ण बाईबल उर्दू मे प्रकाशित की गई। इन सब के अलावा लुधियाना मिशन प्रेस ने बहुत सी धार्मीक पुस्तकें, ट्रेक्ट भी प्रकाशित किए। इस प्रेस द्धारा पंजाबी, उर्दू, फारसी के अलावा और भी बहुत सी भाषाओं मे जैसे कश्मीरी, तिब्बती, पहाडी, हिंदी, अंग्रेजी मे साहित्य का प्रकाशन किया। इस मिशन प्रेस द्धारा प्रकाशित होने वाली अधीकतर सामग्री धार्मीक ही थी। फिर भी इस प्रेस द्धारा विधालयों की पुस्तकें और सरकार के भी कार्य किए जाते थे।

ये मिशन प्रेस बहुत सारा प्रकाशन अलग–अलग संस्थाओ के लिए करती थी। जिसके लिए ये संस्थाए प्रकाशन के लिए मिशन प्रेस को इसकी लागत का मूल्य प्रदान करती थी। इन संस्थाओ मे से पंजाब बाईबल एंड रिलीजियस बुक्स सोसाइटी, अमेरिकन बाईबल एंड ट्रेक्ट सोसाइटी, द प्रेस्बिटेरीयन बोर्ड ऑफ फॉरेन मिशन, लोदीयाना मिशन, हैदराबाद मिशन, द क्रिस्चियन वर्नाकुलर एजुकेशन सोसाइटी, आदि संस्थाए अपना साहित्य प्रकाशन इस मिशन प्रेस से करवाती थी। इसके अलावा इस मिशन प्रेस द्धारा किए जा रहे कार्यों के लिए पंजाब सरकार और कश्मीर के महाराजा भी इस मिशन प्रेस को सहायता देते थे। ये मिशन प्रेस अपनी स्थापना से ही बहूत सा प्रकाशन इन संस्थाओ से अनुबंध (contract) करके ही छापती थी। *'पंजाब बाईबल एंड रिलीजियस बुक्स सोसाइटी'* के लिए इस मिशन ने बहुत सारा साहित्य प्रकाशित किया। 1883 मे इस मिशन प्रेस से 43000 किताबें और ट्रेक्ट इसके अलावा प्रेस के भंडार से सारा धार्मीक साहित्य बहुत अच्छे ढंग से *'पंजाब बाईबल एंड रिलीजियस बुक्स सोसाइटी'* के पास लाहौर भेजा गया।

लुधियाना मिशन प्रेस अपने द्धारा प्रकाशित किए गए साहित्य को ईसाई धर्म का प्रचार के लिए यहां के लोगों में वितरित करती थी। वैसे भी ये प्रेस ईसाई मिशनरीयों द्धारा धर्म प्रचार के उद्देश्य से ही लगाई गई थी। इस मिशन प्रेस ने जो साहित्य धर्म प्रचार के उद्देश्य से अपनी तरफ से प्रकाशित किया उसे जन साधारण में वितरित करने के लिए यां उसे बेचने के लिए भी मिशन द्धारा बहुत से कार्य किए गए। आरम्भ मे मिशन प्रेस प्रकाशित पुस्तकों, और ट्रैक्ट को यहां के लोगों मे मुफ्त बांटती थी और कुछ लोगों को उनकी कृतज्ञापूर्वक मांग पर इस शर्त पर पुस्तकें दी जाती थी की वे इसे पढने के योग्य हों। इसके अतिरिक्त मेलों में भी इन पुस्तकों को वितरित किया जाता था। 1844 मे हरिद्धार मे लगने वाले एक मेले मे इस मिशन प्रेस ने 25000 के करीब पुस्तकें और ट्रैक्ट वितरित किए। इन मेलों से मिशन की पुस्तकें प्रचलन में आने लगी। 1870 तक मिशन प्रेस ने सम्पूर्ण धर्मग्रन्थों को छोड़ कर सारा प्रकाशन मिशनरीयों को मुफ्त मे दिया और ये मिशनरी आगे लोगों मे इसे निशुल्क बांटते थे। जॉन. न्यूटन के अनुसार पहले इन पुस्तकों को मामूली सी कीमत पर बेचने की नीति अपनाई गई मगर मांग न होने की वजह से ये मुफ्त में ही वितरति की जाती रही। बाद मे इन पुस्तकों को बेचने के लिए मिशन द्धारा किताब विक्रेता (colporteurs) हर स्टेशन पर नियुक्त किए गए ये बहुत सारी किताबें और ट्रेक्ट अपने साथ लेकर चलते थे। ये ज्यादातर रेलवे स्टेशन मे ही इन पुस्तकों की बिक्री करते थे। कुछ विक्रेता (colporteurs) *'लुधियाना बुक स्टोर'* के

लिए भी कार्य करते थे। ये बुक स्टोर बहुत समय तक मिशनरीयों के लिए बाईबल और अन्य धार्मीक साहित्य की प्रापती का एक मात्र स्त्रोत था।

इस लूधियाना मिशन प्रेस ने अपने कार्यों से ईसाई मिशनरीयों की धर्म प्रचार करने मे सहायता तो की ही साथ ही अपने प्रकाशन द्धारा यहां की स्थानीय भाषाओं के साहित्यक विकास मे भी अपना योगदान दिया। 1886 तक मिशन प्रेस सारे भारत की प्रेसों मे से उर्दू भाषा मे सबसे अधीक प्रकाशन करने वाली प्रेस बन गई थी। और पंजाबी भाषा के प्रकाशन मे इसने तब तक विशेषता हासिल कर ली थी। इस प्रेस द्धारा प्रकशित किए गए कार्यों के आंकडो से इस प्रेस के कार्यों की सफलता का पता लगाया जा सकता है। जॉन. न्यूटन ने प्रेस द्धारा किए गए कार्य के कुछ आंकडे जाहीर किए हैं। जो इस प्रकार है। अपनी स्थापना के पहले दशक मे 1844 तक प्रेस द्धारा 18,000,000 पन्ने, दूसरे दशक मे 39,000,000 पन्ने, तीसरे दशक मे 55,000,000 पन्ने, चौथे दशक मे 80,000,000 पन्ने, पांचवे दशक तक 75,000,000 पन्ने इस प्रकार लगभग 48 वर्षों मे मिशन प्रेस द्धारा 26 करोड़ 70 लाख पन्ने प्रकाशित हो चुके थे। और इस मिशन की 1888 की वार्षीक रिपोर्ट के अनुसार इस मिशन प्रेस मे 82 मुस्लमान, 3 हिन्दू और 13 ईसाई कर्मचारी कार्यरत थे। इसके अलावा लुधियाना मिशन प्रेस की प्रसिद्धि इसकी स्थापना के कुछ वर्ष पश्चात ही अफगानिस्तान तक हो चुकी थी। प्रेस की स्थापना के कुछ वर्ष पश्चात कुछ अंग्रेज राजनीतिक अधीकारी काबुल भेजे गए तो उन अधीकारीयों को वहां के स्थानीय लोगों ने एक अधीकारी से ईसाई धर्मग्रन्थ पढने का इच्छा जाहिर की तो एक अधीकारी ने वहां से लुधियाना मिशन प्रेस को पत्र भेज कर यहां के लोगों की इच्छा बताई कुछ समय पश्चात अफगानिस्तान के शासक अमीर दोस्त मुहम्मद की तरफ से एक अधीकारी द्धारा मिशन प्रेस को पत्र भेज काबुल के लोगों की ईसाई धर्म ग्रन्थ पढने की इच्छा होने के कारण यहां धार्मीक ग्रन्थ भेजने को कहा गया। मिशन प्रेस द्धारा बहुत सारे ग्रन्थों को खच्चरों पर लाद कर काबुल भेजने के लिए रवाना किया गया मगर इसे कुछ राजनीतिक कारणों के कारण फिरोज़पुर से ही वापीस भेज दिया गया। कुछ वर्ष पश्चात ये धार्मीक ग्रन्थ लाहौर मिशनरीयों द्धारा भेजे गए।

निष्कर्ष

जिस प्रकार प्रेस्बिटेरीयन मिशन ने लुधियाना मे धर्म प्रचार, शिक्षा, स्वास्थय के क्षेत्र मे जिस तरह सफलतापूर्वक कार्य किए उसी तरह लुधियाना मिशन प्रेस भी अपने कार्यों मे सफल रही। इसने पंजाब के पत्रकारिता और साहत्यिक विकास मे अपना साराहनीय योगदान दिया। और ये प्रेस पंजाब की पत्रकारिता के विकास और इतिहास मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

संदर्भ सूची

1. जॉन न्यूटन. हिस्टोरीकल स्केचस ऑफ दी इंडीयन मिशन ऑफ द प्रेस्बिटेरीयन चर्च इन दी यूनाइटेड स्टेटस ऑफ अमेरिका. 1886.पृष्ठ 46–52
2. एमेट डेवीस. प्रेस एंड पॉलिटिक्स इन ब्रिटिश वेर्स्टन पंजाब 1836–1947. 1983
3. जेम्स मेसी. प्रेस्बिटेरीयन मिशनरीज एंड दी डेवलपमेंट ऑफ पंजाबी लैंग्वेज एंड लिटरेचर 1834–1984. 1984य जर्नल ऑफ प्रेस्बिटेरीयन हिस्टरी. वाल्यूम 62. पृष्ठ 258–261
4. पंजाब डिस्ट्रिक्ट गेजिटयर. लुधियान डिस्ट्रिक्ट पार्ट. ए. 1904. 1907. पृष्ठ 94–95
5. दी प्रेजिडेंट रिपोर्ट ऑन दी वर्क ऑफ दी पंजाब मिशन ऑफ दी प्रेस्बिटेरीयन चर्च इन दी यू.एस.ए. 1907. पृष्ठ 15–19
6. मोहिंदर पाल कोहली. दी इन्फलुएंस ऑफ दी वेस्ट ऑन दी पंजाबी लिटरेचर. 1969
7. दी फिफ्टी फोर्थ एनुअल रिपोर्ट ऑफ दी लुधियाना मिशन 1888. 1889. पृष्ठ 42
8. दी फिफ्टी फर्स्ट एनुअल रिपोर्ट ऑफ दी बोर्ड ऑफ फॉरेन मिशन ऑफ दी प्रेस्बिटेरीयन चर्च इन दी य.एस.ए. 1888. पृष्ठ 94